



१ॐ श्रीनिवाकाला भैरवताहा जपकर उ सिं
 म्भू पर्वत कोरी वाला मा धि रोग क म्भू सा त स मु
 च्छ पारतरी सुका वृक्ष मा जाई ला ग ईति मः १
 त्रकी वाचा गुरु की वाचाः सो गे न व न कीडु
 हाई ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीउन्मत्त भैरवाये नमः ॥ ॐ अ
 स्म श्रीउन्मत्त भैरव कवच मा हा म न्न स्य सदा शिव क
 री द ह काय त्री क न्द्र श्रीउन्मत्त भैरवो देवता की वि
 जे की शक्ति स्पें की लें सर्व शत्रु नय नी वारणा र्थ
 ज पे वि । नी योगः ॥ ॥ ॐ उ न्म न्न म शिरो रक्ष त
 ला टे पा तु भैरवः ॥ ग डौ पा तु अहि तां ग क पो ला

रुरु नै रवं ॥ कर्शो नै रवचं ड क पा तु मां ह्रीं ह्रीं
२ ह्याहा ॥ नेत्रयो रवतु क्रोधनासिकां पा तु नै रवः ॥
ओष्माधारै निषसाश्च चिबुकं पा तु नै रवः ॥ हन्त्र
मे पा तु क पालं गले संहार पा तु मां ॥ स्कंदौ रक्षका
लकाटवक्षत्रै लो क्य नाशकः ॥ कुक्षौ रक्षमा हा वि
रवाङ्गु चो न्नत्र नै रवः ॥ जा हा काल करौ पा तु उद